जून 2021

पैरवी संवाद

पब्लिक एडवोकेसी इनीशिएटिव्स फ़ॉर राइट्स एण्ड वैल्यूज़ इन इण्डिया की त्रैमासिक पत्रिका

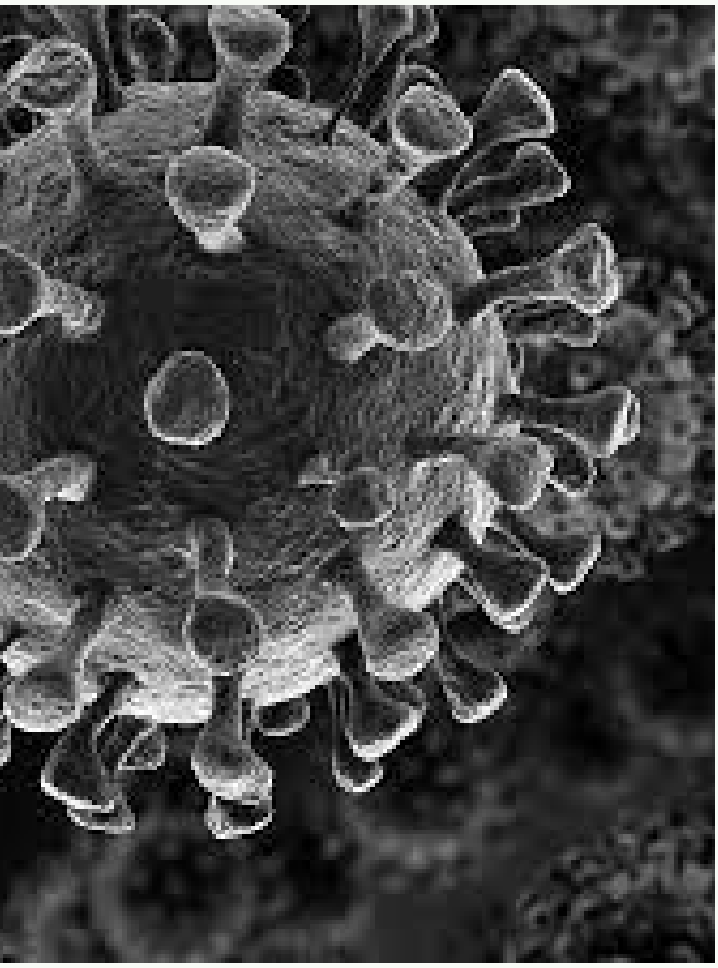

साथियो,

कोविड-19 महामारी एक ऐसे संकट की तरह सामने आई है जिसका सामना इससे पहले शायद ही पूरी दूनिया ने कभी एक साथ किया हो। दो वर्ष से भी कम समय में किसी बीमारी से लाखों की तादाद में लोगों के मारे जाने, और करोड़ों लोगों के ग़रीबी और भुखमरी का शिकार होने का आंकड़ा भयावह है। अमरीका, ब्राजील और भारत इस महामारी के भयावह रूप को देखने वाले शीर्ष तीन देश रहे। भारत में ही तीन करोड़ से अधिक लोग संक्रमित हुए हैं और तकरीबन चार लाख लोगों की मौत हुई है। ऐसी स्थिति में जब लोग महामारी से आतंकित रहे, स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव और वैक्सीन की अनुपलब्धता सरकारी प्रयासों की आलोचना का केन्द्र रहे हैं। दवाओं पर एकाधिकार भी चर्चाओं का प्रमुख बिंदु रहा। वैश्विक पटल पर देखें तो वैक्सीन के मामले में पूँजीवादी दृष्टिकोण नज़र आता है, जहाँ धनी देशों को अपनी सुरक्षा के इंतज़ाम करने की सुविधा रही लेकिन ग़रीब और मध्यम आय वाले देशों के सिर पर वैक्सीन के अभाव की तलवार अभी तक लटकी हुई है। कोविड ने न केवल स्वास्थ्य की दृष्टि से बल्कि आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक व पर्यावरणीय स्तर पर भी लोगों के जीवन को बहुत बुरी तरह प्रभावित किया है। चिंताजनक बात है कि दुनियाभर के लोगों को केंद्र में रखकर कार्ययोजना बनाने वाले संयुक्त राष्ट्र उच्च स्तरीय राजनीतिक मंच जैसे सांगठनिक समूहों का रवैया भी संकट की इस घड़ी में लोगों की आकांक्षाओं के अनुरूप नहीं रहा। न ही सतत् विकास लक्ष्यों पर महामारी के दुष्परिणामों से निपटने के लिए कोई ठोस रणनीति सामने आई, न ही मानवाधिकारों की सुरक्षा के लिए कोई समावेशी योजना। पैरवी संवाद के इस अंक में हमने कोविड महामारी के इन्हीं विविध पहलुओं को समाहित करने का प्रयास किया है।

– रजनीश साहिल

इस अंक में ...

पृष्ठ 2

कोविड महामारी और वैक्सीन का पूँजीवाद

- अजय झा

पृष्ठ 4

बच्चों से छिना बचपन
महामारी ने बदल की बच्चों की दुनिया

– दीनबंधु वत्स

पृष्ठ 6

ब्लैक फंगस: कैसे पहचानें और बचें?

पृष्ठ 7

कोविड 19:
भ्रामक जानकारियाँ और तथ्य

- रजनीश साहिल

पृष्ठ 10

संकट के समय लोगों की आकांक्षाओं पर नाकाम संयुक्त राष्ट्र उच्च स्तरीय राजनीतिक मंच

– अजय झा

पृष्ठ 12 गतिविधियाँ

कोविड महामारी और वैक्सीन का पूँजीवाद

अजय झा

जून के अंत तक कोविड-19 महामारी से पूरी दुनिया में कम से कम 18 करोड़ बीमार हुए और 39 लाख 30 हजार लोग मारे गए हैं। भारत में भी तीन करोड़ से अधिक लोग बीमार और 3,97000 से अधिक मौतें हुई हैं। जहाँ बीमार लोगों की संख्या में भारत अमरीका से पीछे दूसरे स्थान पर है वहीं मौत के आंकड़े में भारत अमरीका और ब्राजील के बाद तीसरे स्थान पर है। अमरीका में तकरीबन छः लाख और ब्राजील में 5,14,000 लोग मारे जा चुके हैं।

महामारी ने पूरी दुनिया को झकझोर दिया है। पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य सुविधाएँ, सामाजिक सुरक्षा, नौकरी व रोज़गार सभी कुछ चौपट हो गया और इसकी भरपाई में काफ़ी समय लगने की आशंका है। ग़रीब देशों की जनता, मज़दूर, बुजुर्गों और महिलाओं पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ा है। ऐसा मानना है कि महामारी की वजह से 5 दशक में अत्यंत ग़रीबी में रहने वाले लोगों में इज़ाफ़ा हुआ है और 124 मिलियन और लोग गरीबी की चपेट में आ गए हैं। महामारी की वजह से 84 से 132 मिलियन लोग भूख का शिकार होंगे। दुनिया के आधे कामगार नौकरी छूटने की कगार पर खड़े हैं और आधी आबादी के पास कोई सामाजिक सुरक्षा नहीं है। कुल मिलाकर स्थिति भयावह है और जल्दी सुधार की गुंजाइश नहीं दिखती।

26 जून तक दुनियाभर में 2,66,07,00,000 वैक्सीन के डोज़ दिए गए हैं। यह टीके ज़्यादातर धनी देशों में लगे हैं और कुछ विकासशील देशों में। उच्च आय वाले देश जहाँ दुनिया की 15 प्रतिशत से भी कम जनसंख्या रहती है, उन्होंने जून 2021 तक उपलब्ध होने वाली आधी से अधिक वैक्सीन ख़रीद रखी है।

वैक्सीन का पूँजीवाद

दुनिया को अभी अगर किसी एक चीज की सबसे ज़्यादा ज़रूरत है तो वह है वैक्सीन। 26 जून तक दुनियाभर में 2,66,07,00,000 (दो अरब छियासठ करोड़ सात लाख) वैक्सीन के डोज़ दिए गए हैं। यह टीके ज़्यादातर धनी देशों में (अमरीका, कनाडा, यूरोप) में लगे हैं और कुछ विकासशील देशों में (चीन, ब्राजील, भारत)। जून के मध्य तक करीब 10 प्रतिशत लोग टीका लेकर पूरी तरह सुरक्षित हो गए हैं और यह सभी तकरीबन धनी देशों में ही हैं।

दुनिया के ग़रीब दशों में अभी तक एक प्रतिशत से भी कम लोगों को वैक्सीन की एक ही डोज मिली है। जन स्वास्थ्य की अच्छी समझ रखने वाले लोगों का मानना है कि महामारी ख़त्म करने के लिए कुल आबादी में से 70 प्रतिशत लोगों को टीका लगाकर सुरक्षित करना ज़रूरी है। कई देशों द्वारा आवश्यकता से काफी अधिक वैक्सीन की अग्रिम ख़रीद से वे इसे ग़रीब देशों तक पहुँचने में बाधा बन रहे हैं। जहाँ कनाडा अपनी जनसंख्या से पाँच गुना अधिक डोज़ ख़रीद चुका है, इंग्लैण्ड और अमरीका अपनी जनसंख्या से साढ़े तीन गुना ज़्यादा वैक्सीन ख़रीद चुका है। यूरोपीय यूनियन के कई अन्य धनी देश भी अपनी जनसंख्या से काफ़ी अधिक वैक्सीन की अग्रिम ख़रीद कर चुके हैं।

उच्च आय वाले देश जहाँ दुनिया की 15 प्रतिशत से भी कम जनसंख्या रहती है उन्होंने जून 2021 तक उपलब्ध होने वाली आधी से अधिक वैक्सीन ख़रीद रखी है। वैक्सीन तक देशों की पहुँच में ग़ैरबराबरी से भी ज़्यादा ख़राब है देशों के अंदर वैक्सीन देने में भेदभाव। कई देशों में देहात और ग़रीब क्षेत्रों में वैक्सीन का अभाव है। लातिन अमरीकी देशों में यह आम है कि जहाँ धनाढ्य वैक्सीन से सुरक्षित हो रहे हैं, वहीं ग़रीब जनता पर कोविड महामारी का दंश बराबर बना हुआ है। इंग्लैण्ड के एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में किए गए मॉडलिंग एक्सपीरिमेंट ने बताया है कि सिर्फ़ धनी देशों में वैक्सीन उपलब्ध करवाने के बजाय दुनिया के सभी हिस्सों में बराबरी से वैक्सीन पहुँचाई जाती तो महामारी में अभी तक हुई मौतों को आधा किया जा सकता था।

कोवैक्स का नाकाफ़ी प्रयास

विश्व बैंक, विश्व स्वास्थ्य संगठन, यूरोपियन कमीशन फ्रांस और बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन द्वारा अप्रैल 2020 में कोवैक्स (ग्लोबल कोवैक्स इनीशिएटिव) की शुरुआत की गई थी जिसका लक्ष्य सभी देशों के सामुहिक प्रयास से दुनिया के ग़रीबतम देशों की 20 प्रतिशत जनसंख्या को 2021 के अंत तक वैक्सीन उपलब्ध करवाना था। लेकिन वैक्सीन की अग्रिम ख़रीद और कम उत्पादन की वजह से यह प्रयास अभी तक नाकाफ़ी रहा है। 190 देशों ने इस प्रयास में हिस्सेदारी की लेकिन यहाँ भी धनी देशों ने ग़रीब देशों के साथ वैक्सीन के लिए प्रतिद्वंदिता की। मई 2021 तक 130 देशों को वैक्सीन की एक भी डोज़ नहीं मिली थी। कोवैक्स की ज़्यादा ख़रीद भारत के सीरम इंस्टीट्यूट से थी जो समय पर वादे के मुताबिक वैक्सीन नहीं दे सका। वैक्सीन की कमी के अलावा भी कोवैक्स पर पारदर्शिता की कमी, धनी देशों और प्राइवेट उत्पादकों के दबदबे के आरोप हैं।

वर्ल्ड ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन में वैक्सीन को पेटेंट से मुक्त करने की माँग

भारत और दक्षिण अफ्रीका ने 2020 में डब्ल्यूटीओ में वैक्सीन पर से पेटेंट हटाने की मांग की थी जिस पर काफ़ी आनाकानी के बाद अमरीका ने भी मई 2021 में एक तरह से अपनी सहमति दे दी है। डब्ल्यूटीओ

भारत और दक्षिण अफ्रीका ने 2020 में डब्ल्यूटीओ में वैक्सीन पर से पेटेंट हटाने की मांग की थी। डब्ल्यूटीओ के 164 में से 120 सदस्य देश इस प्रस्ताव से सहमत हैं, लेकिन कुछ देश, ख़ासकर जर्मनी, इंग्लैण्ड, यूरोपीय संघ इत्यादि इस प्रस्ताव के विरोध में हैं। इनका मानना है कि पेटेंट हटाने से वैक्सीन की गुणवत्ता और उसके उत्पादन में कमी आएगी।

के 164 में से 120 सदस्य देश इस प्रस्ताव से सहमत हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन, यूएन भी पेटेंट हटाने के पक्ष में हैं, लेकिन कुछ देश, ख़ासकर जर्मनी, इंग्लैण्ड, यूरोपीय संघ इत्यादि इस प्रस्ताव के विरोध में हैं। इनका मानना है कि पेटेंट हटाने से वैक्सीन की गुणवत्ता और उसके उत्पादन में कमी आएगी। इस प्रस्ताव पर निर्णय में भी महीनों से सालों लगने की संभावना है।

स्वाभाविक है कि वैक्सीन से अरबों रुपये कमाने वाली वैक्सीन उत्पादक कंपनियाँ भी इस प्रस्ताव के विरोध में हैं। उनका कहना है कि पेटेंट हटाना समाधान नहीं है क्योंकि पेटेंट हटाने के बाद भी वैक्सीन का उत्पादन बढ़ाने में कई समस्याएँ हैं, जैसे कि देशों और महाद्वीपों में वैक्सीन बनाने वाली उत्पादन क्षमता की कमी (मसलन अफ्रीका में ऐसे सिर्फ़ नौ उत्पादक हैं जो वैक्सीन बना सकते हैं), टेक्नोलॉजी और मानव संसाधन की मुश्किलें, कच्चे माल की कमी इत्यादि। देशों की अपनी नीतिगत समस्याएँ - जैसे भारत में 20 से अधिक वैक्सीन उत्पादन की कंपनियाँ हैं लेकिन अभी तक सिर्फ़ कुछेक ही वैक्सीन बना रही हैं - भी वैक्सीन उत्पादन में अडंगा डालती हैं।

67 देशों ने अपनी अग्रिम ख़रीद में से एक बिलियन वैक्सीन की डोज़ ग़रीब देशों को देने का वादा किया है। यह भी मंशा जताई है कि सभी देशों को जल्द से जल्द टीका उपलब्ध कराया जाएगा। लेकिन यह कैसे संभव होगा, इसकी कोई रूपरेखा नहीं है।

ऐसी परिस्थिति में लगता है कि ग़रीब देशों की जनता को वैक्सीन मिलने में कई साल लग सकते हैं। आनेवाले सालों में शायद हमें दो तरह का समाज दिखेगा। एक धनाढ्य, जो महामारी से निडर होगा, लेकिन दूसरा ग़रीब देशों का समाज, जिसके सिर पर महामारी और मौत का डर नाचता रहेगा। वैक्सीन का पूँजीवाद दुनिया में ग़ैरबराबरी बढ़ाकर उसे दो हिस्सों में बाँट देगा। अगर ये विषमता जल्दी दूर करने की कोशिश नहीं हुई तो दुनिया के धनाढ्यों पर और कई लाख मौतों का दोष होगा।

◆◆

बच्चों से छिना बचपन

महामारी ने बदल दी बच्चों की दुनिया

दीनबंधु वत्स

वैश्विक स्तर पर 120 करोड़ से अधिक बच्चों की पढ़ाई स्कूल बंद होने के कारण पूरी तरह से बाधित हो गई है। भारत में ऐसे बच्चों की संख्या 32.1 करोड़ से अधिक है। दुनियाभर में महामारी के कारण साल 2020 में 13 करोड़ 20 लाख से अधिक लोग भुखमरी के शिकार हुए जिसमें 4.4 करोड़ से अधिक बच्चे हैं।

कोरोना महामारी ने बच्चों पर गहरा असर डाला है। स्वच्छंदता ही उनके बचपन की पहचान है। घरों में बंद बच्चों से उनकी आज़ादी छीन ली गई है। महामारी ने बच्चों से उनका बचपन छीन लिया है। बच्चों की दुनिया ही उलट दी है। अब तीसरी लहर की आशंका बच्चों की इस त्रासदी को और अधिक भयावह बना सकती है। इसलिए हमें बच्चों के प्रति सजग और सचेत रहने की ज़रूरत है।

महामारी की गहरी छाप

इस महामारी ने बच्चों पर गहरी छाप छोड़ी है, जिसका प्रभाव आने वाले वर्षों तक देखा जाएगा। देश के करीब 1.2 लाख बच्चों ने अपने माता-पिता या देख-रेख करने वाले प्राथमिक अभिभावक को खो दिया है। लांसेट रिपोर्ट के मुताबिक़ पूरी दुनिया में मार्च 2020 से अप्रैल 2021 के बीच तकरीबन 11.34 लाख बच्चों ने अपने अभिभावकों को खो दिया है। भारत, मैक्सिको (1.4 लाख) और ब्राजील (1.3 लाख) के बाद तीसरा देश है जहाँ सबसे अधिक संख्या में बच्चे अनाथ हुए हैं।

इस महामारी ने दुनिया के करीब 14 करोड़ 20 लाख बच्चों को आर्थिक रूप से ग़रीब परिवारों में धकेल दिया है। यूनिसेफ और सेव द चिल्ड्रन के अध्ययन के मुताबिक महामारी के कारण 15 करोड़ अतिरिक्त बच्चे बहुआयामी ग़रीबी के शिकार हुए हैं जिन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, स्वछता व आवास जैसी ज़रूरी सुविधाओं का आभाव झेलना पड़ रहा है। वैश्विक स्तर पर 120 करोड़ से अधिक बच्चों की पढ़ाई स्कूल बंद होने के कारण पूरी तरह से बाधित हो गई है। भारत में ऐसे बच्चों की संख्या 32.1 करोड़ से अधिक है। दुनिया का हर तीसरा बच्चा स्कूल बंद होने के कारण ऑनलाइन पढ़ाई से दूर रहा। महामारी के कारण पाँच साल से

कम उम्र के 50-60 लाख बच्चे कुपोषण के शिकार हो गए। दुनिया भर में महामारी के कारण साल 2020 में 13 करोड़ 20 लाख से अधिक लोग भुखमरी के शिकार हुए जिसमें 4.4 करोड़ से अधिक बच्चे हैं। एक साल से कम उम्र के आठ करोड़ से अधिक बच्चों को आवश्यक टीका नहीं लग सका। इसके साथ ही बच्चों के प्रति अपराध, हिंसा और शोषण की घटनाओं में भारी वृद्धि देखी गई है।
(https://data.unicef.org/covid&19&and&children)

ज़्यादातर मामलों में बच्चे अपने परिवार के दूसरे सदस्यों से संक्रमित होते हैं, इसलिए बच्चों को सुरक्षित रखने के लिए ज़रूरी है कि परिवार के सभी सदस्य साफ़-सफ़ाई व अन्य सावधानियों का विशेष ध्यान रखें।

तीसरी लहर की आशंका और बच्चे

पहली लहर के मुकाबले दूसरी लहर में बच्चे ज़्यादा बीमार हो रहे हैं। पहली लहर में तीन प्रतिशत और दूसरी लहर में 12 प्रतिशत के करीब बच्चे संक्रमित हुए। यह आशंका व्यक्त की जा रही है कि तीसरी लहर में बड़ी संख्या में बच्चे प्रभावित हो सकते हैं। लेकिन यह दावे के साथ नहीं कहा जा सकता कि तीसरी लहर मुख्यतः या केवल बच्चों को ही प्रभावित करेगी। हालिया सर्वे से पता चलता है कि 50-60 प्रतिशत बच्चों में कोरोना की एंटीबॉडी पाई गई है, इसलिए ज़्यादा डरने की ज़रूरत नहीं है। बावजूद इसके नवजात या छोटे बच्चे अपनी परेशानी नहीं बता सकते और संक्रमण पर खुद सावधानियाँ भी नहीं बरत सकते। बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बड़ों के मुकाबले कमज़ोर होती है, अब तक बच्चों का एक्सपोज़र भी कम हुआ है और भारत में बच्चों के लिए अभी तक कोई वैक्सीन नहीं है, इसलिए हमें बच्चों का ख़ास ख़याल रखना होगा।

बच्चों के मानसिक स्वास्थ पर प्रतिकूल प्रभाव

घरों में बंद लगभग 75-80 प्रतिशत बच्चे मानसिक संताप के शिकार हो गए हैं। बच्चों में डर बैठ गया है। इसलिए बच्चों को मानसिक तौर पर मजबूत बनाने की ज़रूरत है। बच्चों और किशोर-किशोरियों की मनोदशा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। घरेलू हिंसा, माता-पिता की लड़ाई की घटनाएँ इस दौरान बढ़ी हैं। इसका भी ग़लत प्रभाव बच्चों पर पड़ा है। स्कूल बंद है। सामाजिक रूप से अलग-थलग होने के बाद बच्चे सोशल स्किल सीखने की कला भी भूलते जा रहे हैं। इसके लिए ज़रूरी है बच्चों से नियमित रूप से संवाद करना, सीखने की कला को विकसित करना, उनकी चिंताओं को दूर करना और सही सूचना देना। जहाँ तक संभव हो सके बच्चे अपने मित्रों से फ़ोन पर रोजाना बातचीत करें। (यूनिसेफ और चाइल्ड लाइन इंडिया ने माता-पिता और केयरगिवर के लिए एक टूलकिट बनाई है जिसे आप यहाँ देख सकते हैं -
(https://www.unicef.org/india/media/3401/file/PSS&-COVID19&Manual&ChildLine.pdf

अगर कोई छोटा बच्चा संक्रमित हो तो उसे अकेला नहीं छोड़ें। इससे बच्चे में बेचैनी और चिड़चिड़ापन हो सकता है। माता या पिता आवश्यक सावधानी बरतते हुए बच्चे के साथ रहें। बच्चों की देखभाल करने वाला सदस्य भी परिवार के दूसरे सदस्यों से दूर रहे। बच्चों को कोरोना के संक्रमण से सावधान करने की ज़रूरत है, इससे डराने की नहीं। डराने से बच्चों की मनोदशा पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएँ

बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए उनके खान-पान, नींद, व्यायाम, और मानसिक स्वास्थ्य पर जोर देने की ज़रूरत है। बच्चों के माता-पिता को निश्चित रूप से टीका लगाने की ज़रूरत है। बड़े बच्चों को सांस वाली एक्सरसाइज जैसे गुब्बारा फुलाना, पानी में बुलबुले निकालना आदि कराई जा सकती है इससे फेंफड़े मजबूत होंगे जिससे बीमारियों की रोकथाम में मदद मिलती है। बच्चों को खट्टे फल खाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। इससे उनकी इम्युनिटी बढ़ेगी। बच्चों को हल्दी वाला दूध भी पिलाना चाहिए, इससे इन्फेक्शन से लड़ने में मदद मिलेगी।

साफ़-सफ़ाई का रखें ख़ास ख़याल

कोरोना के चलते आज स्वच्छता का ध्यान रखना बहुत ज़रूरी है। बच्चे घर से बाहर भले ही नहीं जा रहे हों लेकिन उन्हें साफ़-सुथरे तरीक़े से रहना सिखाना चाहिए। बच्चों को दिनभर में कई बार साबुन से हाथ धोने के लिए प्रेरित करने की आवश्यकता है। कुछ भी खाने से पहले और खाने के बाद बच्चों में हाथ धोने की आदत डालें। बच्चे को प्रतिदिन नहाने से लेकर साफ़ कपड़े पहनने की आदत डालें। ज़्यादातर मामलों में बच्चे अपने परिवार के दूसरे सदस्यों से संक्रमित होते हैं। इसलिए घर का कोई भी सदस्य बाहर से आने पर अच्छी तरह हाथ धोये और कपड़े बदले, उसके बाद ही बच्चे को छुए। छोटे या नवजात बच्चों को हाथ धो कर ही छुएँ। अभी के हालात में बच्चों को घर से बाहर जाने की ज़रूरत नहीं है। अगर विशेष परिस्थितियों में बाहर जाना भी पड़े तो दो साल से अधिक उम्र के बच्चों को मास्क पहना कर ही बाहर ले जाना चाहिए और संभव हो तो आँखों को भी चश्मा या फेस शील्ड से ढँक लें। मौजूदा परिस्थिति में आसपास के अन्य बच्चों के साथ समूह में खेलने से बचने की ज़रूरत है।

स्तनपान न रोकें

संक्रमित माँ को भी स्तनपान जारी रखना चाहिए। यदि माँ का संक्रमण बिना लक्षण या हल्के लक्षण वाला हो तो वह बच्चे को गोद में लेकर दूध पिला सकती है। बच्चे को छूने से पहले माँ को साबुन से हाथ अच्छी तरह धो लेना चाहिए और मास्क पहनना चाहिए। लेकिन अगर माँ को तेज बुखार हो, साँस लेने में तकलीफ़ हो या लगातार खाँस रही हो तो ऐसी स्थिति में माँ अपना दूध निकाल दे और परिवार का कोई अन्य सदस्य बच्चे को दूध पिला दे।

घर में रह कर उपचार

हालांकि कोरोना से प्रभावित ज़्यादातर बच्चे बिना लक्षण के या हल्के लक्षण वाले होते हैं, जो घर में रहकर ठीक हो जा रहे हैं। लेकिन घर में केवल बिना लक्षण के या फिर हल्के लक्षण वाले बच्चों की ही देखभाल संभव है, बशर्ते कि देखभाल की उचित व्यवस्था हो। अगर घर में बच्चों की देखभाल की उचित व्यवस्था नहीं हो तो अस्पताल में इलाज कराने की ज़रूरत है।

बच्चों में लक्षण और देखभाल

बच्चों के लक्षण भी सामान्यतः बड़े लोगों जैसे होते हैं। बुखार, बदन दर्द, सर्दी-खांसी के अलावा उल्टी, दस्त और पेट में दर्द भी हो सकता है। इसके अलावा बच्चों के हाथ-पैर में सूजन, शरीर और पैर में लाल चकत्ते होना, होंठ लाल होना या फटना, चेहरे का नीला पड़ना जैसे लक्षण भी हो सकते हैं। नवजात या छोटा बच्चा अगर सुस्त हो, खाना-पीना कम कर दे, चिड़चिड़ा हो गया हो, पसलियाँ ज़्यादा चल रही हों या फिर पहले की अपेक्षा ज़्यादा सो रहा हो तो डॉक्टर से तुरंत संपर्क करने की ज़रूरत है। ध्यान रहे दो महीने तक का बच्चा एक मिनट में 60 बार से अधिक, दो महीने से एक साल तक का बच्चा एक मिनट में 50 बार से अधिक, एक साल से पाँच साल के बीच का बच्चा एक मिनट में 40 बार से अधिक और पाँच साल से अधिक का बच्चा एक मिनट में 30 बार से अधिक साँस ले रहा हो तो तुरंत अस्पताल ले जाने की ज़रूरत है।

100 डिग्री फ़ारेनहाइट से अधिक बुखार की स्थिति में बच्चों को पेरासिटामोल दिया जाना चाहिए। पेरासिटामोल बच्चे के वज़न के हिसाब से देते हैं। 10-15 मिलीग्राम पेरासिटामोल प्रति किलोग्राम प्रति डोज़ के हिसाब से 24 घंटे में अधिकतम चार बार दे सकते हैं। जैसे अगर कोई बच्चा 10 किलोग्राम का है तो बुखार की स्थिति में उसे 100-150 मिलीग्राम पेरासिटामोल दिन में चार बार दे सकते हैं। ध्यान रहे कि पेरासिटामोल की दो ख़ुराकों के बीच में कम से कम चार घंटे का अंतराल होना चाहिए। घर में इलाज कर रहे बच्चे के शरीर में पानी की पर्याप्त मात्रा बनाऐ रखने की आवश्यकता है। उसे तरल चीजें जैसे दूध, दाल, नींबू पानी, ओआरएस आदि पिलाते रहना चाहिए। छोटे बच्चे नियमित अन्तराल पर पेशाब कर रहे हैं या नहीं यह भी ध्यान देने की ज़रूरत है।

अगर माता-पिता दोनों संक्रमित हैं और कोई अन्य सदस्य घर में बच्चों की देख-रेख के लिए नहीं हो तो ऐसे में अपने बच्चे को किसी अन्य रिश्तेदार के यहाँ छोड़ सकते हैं, बशर्ते कि बच्चे का कोरोना टेस्ट नेगेटिव हो। अगर बच्चे को किसी अन्य रिश्तेदार के यहाँ नहीं भेज सकते हैं तो घर पर ही ज़रूरी सावधानी के साथ रह सकते हैं। घर में सभी लोग मास्क लगा कर रहें और अन्य आवश्यक सावधानियाँ बरतें।

कोरोना ने समाज के सभी तबक़ों को प्रभावित किया है, लेकिन बच्चे सबसे अधिक पीड़ित और प्रभावित होने का जोखिम उठा रहे हैं। महामारी के कारण बच्चों के जीवन में गहरा बदलाव आ रहा है जिसका प्रभाव आने वाले दशकों तक पड़ेगा। इस प्रभाव को हम कैसे कम से कम कर सकें, इसके लिए हमें न केवल गंभीरता से विचार करना होगा, बल्कि बच्चों को सकारात्मक माहौल देने का प्रयास भी करना होगा।

◆◆

ब्लैक फंगस: कैसे पहचानें और बचें?

हाल के दिनों में देखा जा रहा है कि कोविड के दौरान या कोविड से ठीक होने का बाद लोगों को फफूंद वाला संक्रमण (फंगल इन्फेक्शन) हो जा रहा है। यह फंगल इन्फेक्शन कई दफ़ा जानलेवा साबित हो रहा है। लेकिन डरें नहीं, फंगल इन्फेक्शन कोरोना की तरह संक्रामक बीमारी नहीं है। यह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में नहीं फैलता है और समय से इलाज हो तो यह ठीक भी हो जाता है। इस महामारी के दौरान कई तरह के फंगल इन्फेक्शन हो रहे हैं जिसमें सबसे ज्यादा मामला म्युकरमायकोसिस या ब्लैक फंगस का सामने आ रहा है। म्युकरमायकोसिस चेहरे, नाक, सायनस, आंख और दिमाग में फैलकर उसको नष्ट कर देती है। ये फंगस हर जगह होता है, मिट्टी, हवा,सड़ी-गली फल-सब्जी, नमी वाली जगह। यहाँ तक कि यह स्वस्थ इन्सान की नाक और बलगम में भी मौजूद रहता है।

कैसे करता है शरीर में प्रवेश?

यह शरीर में नाक, मिट्टी से संपर्क, खून के जरिए, त्वचा के कटने पर शरीर में प्रवेश कर सकता है।

लक्षण क्या हैं?

इसके प्रमुख लक्षण नाक बंद होना, नाक से खून आना, आंख व सिर में दर्द होना, चेहरे में एक तरफ सूजन या सुन्न हो जाना, धुंधला दिखना, दांत में दर्द, दांत हिलने लगना, चबाने में दर्द होना, खून की उल्टी, आँखों से रोशनी जाना आदि हैं।

ख़तरा किसे ज़्यादा है?

ऐसे कोरोना मरीज जिन्हें शुगर की बीमारी है, जिन्हें इलाज के दौरान स्टेरॉयड दिए गए हों, जिन्हें लम्बे समय तक ऑक्सीजन पर या आईसीयू में रहना पड़ा हो को फंगल इन्फेक्शन का अधिक ख़तरा होता है। इसके अलावा जिनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कमज़ोर है, जिनका शुगर लेवल ज़्यादा बढ़ा हुआ है या जिनकी कैंसर/अंग प्रत्यारोपण की दवा चल रही हो उनके संक्रमित होने की भी अधिक आशंका रहती है।

बचाव के तरीके

कोई भी लक्षण दिखाई देने पर सबसे पहले डॉक्टर को दिखाएं। इसके लिए आप नाक, कान, गला के विशेषज्ञ डॉक्टर से तुरंत संपर्क करें। धूल भरी जगह पर मास्क लगाकर जाएँ। मिट्टी से जुड़ा काम दस्ताने पहन कर करें। व्यक्तिगत साफ़-सफ़ाई का ख़ास ख़याल रखें। चेहरा साफ़ करते रहें। शुगर लेवल जाँचते रहें।

स्टेरॉयड के प्रयोग में सावधानी बरतें

डेकसोना, मेड्रोल जैसी स्टेरॉयड दवाइयाँ कभी अपने से या किसी गैरविशेषज्ञ डॉक्टर के कहने पर भी न लें। स्टेरॉयड का प्रयोग विशेषज्ञ डॉक्टर कोरोना मरीजों पर केवल 5-10 दिनों के लिए ही करते हैं। वह भी बीमारी के 5-7 दिनों के बाद जब ज़रूरी होता है। ध्यान रहे स्टेरॉयड के उपयोग के बाद आपका शुगर लेवल अचानक से बढ़ने का ख़तरा रहता है।

कोविड 19: भ्रामक जानकारियाँ और तथ्य

संकलनः रजनीश साहिल

जैसे-जैसे कोविड 19 का संक्रमण फैला है, वैसे-वैसे ही उससे जुड़ी नयी-नयी भ्रामक जानकारियाँ भी लोगों तक पहुँची हैं। कभी यह जानकारियाँ सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों तक पहुँचीं और कभी कुछ लोगों ने अपने एजेण्डे के तहत इन्हें लोगों तक पहुँचाने का काम किया। इन्हीं भ्रामक जानकारियों में संक्रमण से बचाव और इलाज से जुड़ी कई अप्रमाणित जानकारियाँ भी हैं, जिनके तथ्य यहाँ दिए गए हैं -

कोरोना/संक्रमण के बारे में भ्रामक जानकारियाँ और उनके तथ्य:

कोरोना मच्छर के काटने से भी फैलता है	अब तक ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिला है।
शराब पीने से कोरोना नहीं होगा	यह असत्य है।
गौमूत्र पीने से कोरोना नहीं होगा	यह अप्रमाणित है।
धूप में वायरस मर जाता है	यह असत्य है।
घर के पालतू जानवरों को भी संक्रमण हो सकता है	फ़िलहाल इसका कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है लेकिन पशुओं को छूने के बाद साबुन व पानी से हाथ धोना चाहिए।
नमक-पानी से नियमित नाक साफ़ करने से संक्रमण से बचा जा सकता है	नमक-पानी से गरारे करने से गले में ख़राश/खुजली की स्थिति में, सामान्य जुकाम के कुछ मामलों में राहत मिलती है लेकिन यह संक्रमण से बचा सकता है, इसका कोई प्रमाण नहीं है।
नींबू के रस को नाक में डालने से कोरोना ख़त्म हो जाता है	यह असत्य व अप्रमाणित है।
शरीर पर क्लोरीन या एल्कोहल लगाने से वायरस मर जाएगा	क्लोरीन या एल्कोहल से वस्तुओं की सतह को कीटाणुरहित कर सकते हैं लेकिन त्वचा पर इनका इनका इस्तेमाल करना हानिकारक है।

मास्क लगाने से कोरोना नहीं होगा	मास्क लगाने से मुँह और नाक द्वारा कोरोना वायरस के सीधे सपंर्क में आने और संक्रमित होने की आशंका काफ़ी कम हो जाती है, लेकिन यह एक सुरक्षात्मक उपाय है।
छोटे बच्चों को कोरोना नहीं होगा	कोरोना से किसी भी उम्र का व्यक्ति संक्रमित हो सकता है।
साबुन से हाथ धोने के बजाय हैंड सैनिटाइज़र अधिक प्रभावी है	दोनों ही समान रूप से प्रभावी हैं, लेकिन जब हम साबुन-पानी से हाथ धोते हैं तो न केवल कीटाणुओं से मुक्त होते हैं बल्कि अन्य प्रकार के महीन कणों को भी धो देते हैं। यदि आपके हाथों पर धूल/मिट्टी या अन्य महीन कण लगे हों तो हैंड सैनिटाइज़र के बदले साबुन का उपयोग करना बढ़िया रहता है।
नॉनवेज खाने से कोरोना के संक्रमण का डर बना रहता है।	यह असत्य है। उल्टे इन सब चीजों के सेवन से हमारे शरीर को प्रोटीन मिलता है।
गर्म पानी से नहाने से वायरस से बचा जा सकता है	गर्म पानी से नहाने के बावजूद आप संक्रमण का शिकार हो सकते हैं। क्योंकि आपके शरीर का तापमान 36.7 से 37 डिग्री सेल्सियस के बीच होता है। ज़्यादा गर्म पानी से नहाना भी शरीर के लिए ठीक नहीं है।
एंटीबायोटिक्स कोरोनोवायरस के इलाज में फायदेमंद हैं	एंटीबायोटिक्स वायरस की रोकथाम करने में सफल नहीं हैं, बल्कि यह बैक्टीरिया में फायदेमंद है। नोवेल कोरोनावायरस एक वायरस है और इसके इलाज के दौरान डॉक्टर द्वारा एंटीबायोटिक्स देने का मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि यह इसके इलाज में कारगर है। जब इस वायरस से संक्रमित मरीज को एंटीबायोटिक्स दिया जाता है, तो डॉक्टर की यह कोशिश होती है कि वायरस के साथ जो बैक्टीरिया बीमार कर रहे हैं, उन्हें नष्ट किया जाए।
5जी नेटवर्क का रेडिएशन बीमारी के पीछे है	यह भ्रामक बात है। कोरोना ने उन तमाम पिछड़े और ग़रीब देशों में भी लोगों को बीमार किया है, जहां 5जी नेटवर्क नहीं है।
निमोनिया के टीके कोरोनावायरस से बचा सकते हैं	निमोनिया के टीके जैसे न्यूमोकोकल वैक्सीन और हीमोफिलस इन्फ्लुएंजा टाइप बी एचआईबी वैक्सीन से कोरोनावायरस नहीं मरता। कोरोनावायरस इतना नया और अलग है कि इसे विशेष तौर पर इसी बीमारी के लिए बनाए गए टीके से ही रोका जा सकता है।
10 सेकंड/20 सेकंड साँस रोक ली, तो इसका मतलब कोरोना नहीं है	वायरस की मौजूदगी जानने का यह तरीका बिल्कुल ग़लत है। बड़ी आबादी उनकी भी है, जिनमें संक्रमण के सामान्य लक्षण भी नहीं दिखते। ऐसे में हो सकता है कि कोई 20-25 सेकंड अपनी साँस रोक ले, पर वह कोरोना का कैरियर हो। सबसे बेहतर उपाय यही है कि थोड़ा भी शक होने पर लैब टेस्ट कराएँ।
मास्क की ही तरह ज़रूरी हैं ग्लव्स	नहीं, ऐसा बिल्कुल नहीं है। हाथों को बार-बार धोने और सैनिटाइज़ करने का कोई विकल्प नहीं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की मानें तो ग्लव्स पहनने से ख़तरा बढ़ता ही है। मान लीजिए कि ग्लव्स पहने आपके हाथों ने किसी ऐसी सतह को छुआ, जहाँ वायरस मौजूद है। फिर आपने उस ग्लव्स को उतारकर दूसरी जगह रख दिया। यूँ वायरस एक से दूसरी जगह पहुँच सकता है। यह भी हो सकता है कि ग्लव्स उतारने के दौरान आप खुद भी उनके संपर्क में आ जाएँ। इसलिए बेहतर होगा कि हैंड सैनिटाइज़र का इस्तेमाल करें।
अल्ट्रा-वॉयलेट लैंप मारेगा शरीर के वायरस	भूलकर भी अल्ट्रा-वॉयलेट लैंप का इस्तेमाल हाथों या शरीर के किसी हिस्से पर मत कीजिएगा। इससे त्वचा में खुजली और दूसरी दिक्कतें हो सकती हैं। आँखों में सीधी रोशनी पहुँचने पर नुकसान हो सकता है। इसी तरह हैंड ड्रायर भी हाथ सुखाने के लिए सही हैं, वायरस मारने के लिए नहीं।

प्याज-फिटकरी के उपयोग से ठीक होगा कोरोना	आयुर्वेद में फिटकरी का प्रयोग बुखार और प्याज का प्रयोग कफ़ ख़त्म करने में होता है, लेकिन इसका कोई तथ्य नहीं है कि ये कोरोना संक्रमण ख़त्म कर दें। इनका उपयोग करने से पहले सलाह लें।
होम्योपैथी दवाइयों से तुरंत बढ़ेगा मरीज का ऑक्सीजन लेवल	राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर के होम्योपैथिक कॉलेज के प्राचार्य अमेय गोस्वामी के अनुसार होम्योपैथी में ऐसी कोई दवा नहीं है, जो कोरोना संक्रमित व्यक्ति का ऑक्सीजन लेवल एकदम बढ़ा दे।
फिटकरी व नींबू के पानी से आंख धोने, गरारे करने और नाक में डालने से नहीं होगा ब्लैक फ़ंगस	मदनमोहन मालवीय राजकीय आयुर्वेद कॉलेज, उदयपुर के प्राचार्य महेश दीक्षित के अनुसार ये अनुसंधान कहीं नहीं हुआ है कि इससे ब्लैक फ़ंगस ठीक हो जाए।

वैक्सीन के बारे में भ्रामक जानकारियाँ और उनके तथ्य:

भारतीय वैक्सीन दूसरे देशों की वैक्सीन की तुलना में कम प्रभावकारी है	भारतीय वैक्सीन कई ट्रायल तथा परीक्षणों से गुज़री है। यह कोरोना के ख़िलाफ सटीक और प्रभावकारी है।
कोविड वैक्सीन डीएनए बदल देता है	कोविड वैक्सीन आपके डीएनए में किसी भी तरह का कोई बदलाव नहीं करता है। दवाओं पर शोध करने वाले एक्सपर्ट्स का कहना है कि कोविड वैक्सीन में आरएनए और सेलुलर नाभिक में डीएनए के बीच कोई संबंध नहीं है।
जो लोग शराब और सिगरेट का सेवन करते हैं, उन्हें वैक्सीन नहीं लेनी चाहिए वरना वे कैंसर के शिकार हो सकते हैं	यह बात अप्रमाणित है। अब तक किसी भी शोध में ये बात सामने नहीं आई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार जो लोग धूम्रपान करते हैं, उनमें संक्रमण का ख़तरा अधिक होता है, उन्हें टीकाकरण कराना आवश्यक है।
कोविड वैक्सीन से नपुंसक/बांझ हो जाएंगे	ऐसा नहीं है। कोविड वैक्सीन किसी भी तरह प्रजनन क्षमता को प्रभावित नहीं करती है।
गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं को वैक्सीन नहीं लगवानी चाहिए, उनके लिए ये ख़तरनाक हो सकती है	तमाम एक्सपर्ट्स और गायनेकोलॉजिस्ट का कहना है कि गर्भवती महिलाओं के लिए वैक्सीन लगवाना जोखिम की तुलना में ज़्यादा फ़ायदेमंद होता है। केंद्र सरकार की नई गाइडलाइन में भी कहा गया है कि स्तनपान कराने वाली और गर्भवती महिलाएं वैक्सीन लगवा सकती हैं।
जो लोग डायबिटीज, अस्थमा और हाइपरटेंशन के शिकार हैं, उन्हें वैक्सीन नहीं लगवानी चाहिए	ऐसे लोगों को वैक्सीन ज़रूर लगवानी चाहिए। शुगर, अस्थमा और हाइपरटेंशन से पीड़ित लोग कोविड के गंभीर लक्षणों की चपेट में आते हैं। वैक्सीन से वे गंभीर ख़तरे से बच सकते हैं।
वैक्सीन में ऐसी माइक्रोचिप है जिसके ज़रिए सरकार आपकी निगरानी करेगी	यह बात असत्य है। वैक्सीन के साथ शरीर में ऐसी कोई भी चिप नहीं डाली जा रही है। अभी तक ऐसी कोई मॉनिटरिंग माइक्रोचिप नहीं बनी है जो रक्त वाहिनियों में इन्जेक्ट की जा सके।
वैक्सीन लगवाने से स्वस्थ्य व्यक्ति को भी कोरोना हो जाएगा।	वैक्सीन लगवाने के बाद हल्के बुखार, सिरदर्द जैसे लक्षण हो सकते हैं लेकिन इससे कोरोना नहीं होगा। वैक्सीन में लाइव वायरस नहीं होता, जिससे कि कोई कोरोना संक्रमण होता है।

◆◆

संकट के समय लोगों की आकांक्षाओं पर नाकाम
संयुक्त राष्ट्र उच्च स्तरीय राजनीतिक मंच

अजय झा

वह संकट, जो पहले कभी नहीं हुआ, एक अभूतपूर्व प्रतिक्रिया की मांग करता है। बहुपक्षवाद, एजेंडा 2030 व पारिस्थितिक संतुलन और मानवाधिकारों की केंद्रीयता वाले एसडीजी में विश्वास बहाल करने वाली प्रतिक्रिया रिकवरी और पुनर्स्थापना के सभी प्रयासों के केन्द्र में होनी चाहिए।

संयुक्त राष्ट्र उच्च स्तरीय राजनीतिक मंच (HLPF) के कंधों पर वर्तमान अस्थिर दुनिया से ग़रीबी व भूख मिटाने और एक दशक में पारिस्थितिक संतुलन सुनिश्चित करने में मदद करने की ज़िम्मेदारी है। ऐसे समय में जहाँ लगभग चार मिलियन लोग मारे गए, तकरीबन 190 मिलियन लोग बीमार हुए और करोड़ों लोग भुखमरी व अत्यधिक ग़रीबी में घिर चुके हैं, 7.9 मिलियन लोगों की आकांक्षाएँ एचएलपीएफ पर एक अटूट कर्तव्य बन जाती हैं। स्थिरता और जलवायु, जैव विविधता का तेजी से ह्रास और निम्न व मध्यम आय वाले देशों के लिए असमानता व ग़रीबी के जाल के मौजूदा संकटों में वृद्धि करते हुए कोविड 19 महामारी ने न केवल आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों, बल्कि सतत् विकास लक्ष्यों (SDGs) को प्राप्त करने की दिशा में जो भी प्रगति की है, उसे एक गंभीर झटका दिया है। यह एचएलपीएफ के सामने बहुपक्षवाद, राजनीतिक महत्वाकांक्षा और साहस दिखाने के लिए परीक्षा की घड़ी है जहाँ सामान्य अंतर-सरकारी प्रक्रिया से एक क़दम आगे बढ़कर एजेंडा 2030 के वादे को पूरा करने के लिए कुछ बेहतर किया जा सकता है।

मंत्रिस्तरीय घोषणा, जो एचएलपीएफ का प्रमुख परिणाम है, ने अर्थव्यवस्था, समाज, स्वास्थ्य और आजीविका पर कोविड 19 महामारी के प्रतिकूल प्रभावों की पहचान करने के अलावा एजेंडा 2030 और सतत् विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में इस महामारी के गंभीर प्रभावों की पहचान करने का अच्छा काम किया है। हम 2030 एजेंडा को लागू करने की दिशा में कमजोर स्थितियों वाले देशों पर ध्यान केंद्रित करने, श्रम अधिकारों की रक्षा और प्रेषण शुल्क को कम करने, देखभाल अर्थव्यवस्था में निवेश बढ़ाने सहित जेंडर रेस्पॉन्सिव रिकवरी के दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करने व त्वरित प्रगति के आह्वान का स्वागत करते हैं। हालाँकि, हम इस घोषणा में दुनिया के सामने मौजूद संकटों के अनुरूप महत्वाकांक्षा की कमी से बहुत दुखी हैं। यह मंत्रिस्तरीय घोषणापत्र परिवर्तनकारी के बजाय एक रूढ़िवादी और पारंपरिक दृष्टिकोण वाला है। केवल पुरानी प्रतिबद्धताओं की पुष्टि करना

(जो महामारी से पहले भी स्पष्ट रूप से अपर्याप्त थीं) इस संकट की घड़ी में पर्याप्त नहीं है। जलवायु परिवर्तन, निष्कर्षणवादी अर्थव्यवस्थाओं से अनंत विकास की मांग, असमान शक्ति संबंध, अस्थिर ऋण और अवैध वित्तीय प्रवाह, एक राजनीतिक उपकरण के रूप में पितृसत्ता, शासन पर कॉर्पोरेट कब्जा, विकास व स्थिरता का एजेंडा और मानवाधिकारों की पूर्ति व सम्मान पर इसके प्रभाव जैसी प्रणालीगत बाधाओं को संबोधित करने से लगातार इनकार भी चिंताजनक है।

हालाँकि, महामारी द्वारा दिए गए झटके के आलोक में हमें एजेंडा 2030, दृढ़ राजनीतिक महत्वाकांक्षा और कार्यान्वयन के साधनों सहित जोरदार बहुपक्षीय प्रयासों को पूरा करने के लिए एचएलपीएफ में नए सिरे से विश्वास क़ायम करने की आवश्यकता है। महामारी से उबरने और एजेंडा 2030 को प्राप्त करने के लिए केवल राष्ट्रीय प्रयास काफी नहीं होंगे। इस पृष्ठभूमि में सीएसओ, एचएलपीएफ और सदस्य राज्यों से महामारी के पीछे न छिपने और एक ऐसे मजबूत राजनीतिक (मंत्रिस्तरीय) घोषणापत्र के साथ बाहर आने का आह्वान करते हैं जो बहुपक्षवाद में विश्वास, महामारी से उबरने और एजेंडा 2030 के किसी को पीछे न छोड़ने के केंद्रीय दर्शन को आश्वस्त करता हो। हमारा प्रस्ताव है कि घोषणापत्र को लोगों की निम्नलिखित चिंताओं का समाधान करना चाहिए-

टीकों और उपचार तक समान रूप से मुफ़्त पहुँच: इस समय दुनिया को जिस चीज की सबसे ज़्यादा ज़रूरत है, वह है वैक्सीन तक समान पहुँच। एचएलपीएफ को उन देशों को प्रोत्साहित करना चाहिए जो वैक्सीन को पेटेंटमुक्त कराने के लिए प्रयासरत हैं। इसके साथ ही बुनियादी ढांचे और क्षमता अंतराल, वैक्सीन निर्माताओं के प्रतिरोध, कच्चे माल पर प्रतिबंध और व्यापार संबंधी प्रतिबंधों व टीके की आवाजाही और वितरण की सुविधा से संबंधित अन्य बाधाओं को दूर करने के प्रयास करना चाहिए। पहुंच और उपलब्धता के अलावा यह भी महत्वपूर्ण है कि वैक्सीन संबंधी आवश्यकताओं पर सार्वभौमिक अनिवार्य मापदण्ड या आवश्यक वस्तुओं, व्यक्तियों की आवाजाही संबंधी नियमन लागू न किए जाएँ। विशेषज्ञों का मानना है कि महामारी तब तक ख़त्म नहीं होगी जब तक कि विश्व की 70 प्रतिशत जनसंख्या सुरक्षित नहीं हो जाती। हम धनी देशों द्वारा ग़रीब देशों को वैक्सीन की एक बिलियन खुराक वितरित करने के प्रयास की सराहना करते हैं, लेकिन इस क़दम को मुफ़्त टीके के लिए समान सार्वभौमिक पहुँच बनाने की तत्काल आवश्यकता से प्रतिस्थापित नहीं किया जाना चाहिए।

ग़रीबी और भूख के उन्मूलन से पीछे न हटें: महामारी के बावजूद ग़रीबी और भूख का उन्मूलन संभव है। घोषणापत्र के मसौदे से लगता है कि महामारी ने एसडीजी-1 और एसडीजी-2 के लक्ष्य को हासिल करना नामुमकिन बना दिया है। हम एचएलपीएफ से आग्रह करते हैं कि वह ग़रीबी और भूख के उन्मूलन में कोई कसर न छोड़े जो कि एजेंडा 2030 के वादे का प्रमुख बिंदु है।

कार्यान्वयन के साधनों के बिना इरादों से एजेंडा 2030 हासिल नहीं किया जा सकता: 52 साल पहले बनाया गया विकसित देशों की सकल राष्ट्रीय आय के 0.7 प्रतिशत का आकांक्षी लक्ष्य आज दुनिया को ग़रीबी से छुटकारा दिलाने के लिए पर्याप्त नहीं है। जलवायु संकट और उसके प्रभावों को रोकने के लिए 100 बिलियन अमरीकी डालर भी समान रूप से अपर्याप्त है। विकासशील देशों को 2030 तक हर साल 2.5 से 3 ट्रिलियन डॉलर के वित्तीय अंतर का सामना करना होगा। वैश्विक शक्ति संबंधों में विषमता को दूर करने, ऋण स्थिरता, अवैध वित्त प्रवाह को रोकने आदि जैसी प्रणालीगत बाधाओं को दूर करने के अलावा सहायता, वित्त, व्यापार, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और क्षमता निर्माण सहित कार्यान्वयन के साधनों की पूरी श्रृंखला को तैनात करने की आवश्यकता है।

जलवायु संकट पर वास्तविक और गंभीर प्रतिक्रिया: जलवायु संकट निस्संदेह ग़रीबी और भूख के उन्मूलन के अलावा भी एसडीजी के बहुमत को प्राप्त करना असंभव बनाता है। भले ही 2020 में महामारी के कारण दुनिया एक महत्वपूर्ण समय के लिए बंद थी, लेकिन फिर भी 2020 अब तक का सबसे गर्म वर्ष रहा। उत्सर्जन केवल मामूली रूप से कम हुआ जो कि वापसी का दावा कर रहा है। कोविड और जलवायु से एक साथ प्रभावित करोड़ों लोगों ने केवल जीवित रहने और बीमार होने से बचने के लिए संघर्ष किया क्योंकि निम्न व मध्यम आय वाले देशों में लोगों को आपदा से निकालने और कोविड के अनुरूप व्यवहार का पालन करने के लिए कोई भी बुनियादी ढांचा पर्याप्त नहीं था। देशों ने भयानक रूप से अपर्याप्त प्रतिबद्धताओं (एनडीसी) को रखा है जो उग्र संकट का जवाब देने में विफल रही हैं। ऐसे में एचएलपीएफ देशों को प्रगतिशील विचारों, वास्तविक समाधानों पर एक साथ लाने और आम ज़मीन तलाशने के लिए एक अतिरिक्त अवसर होना चाहिए।

विज्ञान प्रौद्योगिकी और नवोन्मेष केवल निजी क्षेत्र का नहीं: इस दुनिया को टिकाऊ और समावेशी बनाने में एसटीआई की महत्वपूर्ण भूमिका है। हालांकि, एसटीआई को केवल संस्थागत विज्ञान और प्रौद्योगिकी नवाचार के रूप में अधिक परिभाषित किया जा रहा है, जिसे अक्सर निजी क्षेत्र द्वारा समर्थित किया जाता है। एसटीआई के इस संकीर्ण दृष्टिकोण में स्वदेशी आबादी, महिलाओं, किसानों के सदियों के अनुभव पर विकसित व्यापक ज्ञान प्रणाली शामिल नहीं है। विज्ञान प्रौद्योगिकी और नवाचार के बढ़ते उपयोग सभी के लिए उपयोगी होने चाहिए और आवश्यकता, हितों के टकराव व दीर्घकालिक पारिस्थितिक स्थिरता के लिए इसकी उपयोगिता पर आधारित एक मजबूत समावेशी तंत्र द्वारा निर्देशित होना चाहिए।

हम बेहद चिंतित हैं कि कई एचएलपीएफ मंत्रिस्तरीय घोषणाओं के लिए मतदान किया जा रहा है। यह और भी बुरा था कि एचएलपीएफ 2020 में एक भी घोषणा को अपनाने में विफल रहा। हम दोहराते हैं कि वह संकट जो इससे पहले कभी नहीं हुआ, एक अभूतपूर्व प्रतिक्रिया की माँग करता है। संयुक्त राष्ट्र एक अंतर-सरकारी मंच हो सकता है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण यह है कि दुनिया के लोग इसका केंद्रबिंदु हैं। इसलिए बहुपक्षवाद, एजेंडा 2030 व पारिस्थितिक संतुलन और मानवाधिकारों की केंद्रीयता वाले एसडीजी में विश्वास बहाल करने वाली प्रतिक्रिया रिकवरी और पुनर्स्थापना के सभी प्रयासों के केन्द्र में होनी चाहिए। ◆◆

गतिविधियाँ

कोविड रेस्पॉन्स कोऑर्डिनेशन कमिटी

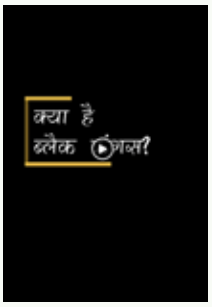

कोविड महामारी की दूसरी लहर के दौरान जब स्थिति बेहद ख़राब थी और लोग डरे हुए थे, पैरवी द्वारा बिहार और मध्य प्रदेश की सहयोगी संस्थाओं के साथ मिलकर एक कोविड रेस्पॉन्स कोऑर्डिनेशन कमिटी बनाने का निर्णय 30 अप्रैल को लिया गया। महामारी के दौरान लोगों को मदद पहुँचाने के उद्देश्य से 150 से अधिक स्वयंसेवकों को शामिल किया गया एवं उनके प्रशिक्षण आयोजित किए गए। जागरूकता, रोकथाम, परामर्श, घर पर देखभाल, चिकित्सा की आवश्यकता, टीकाकरण और अन्य मिथकों की सच्चाई, बच्चे और कोविड आदि पर हिंदी में पोस्टर, पुस्तिकाएँ और शैक्षिक वीडियो तैयार किए गए हैं। चिकित्सकों का एक समूह भी समिति के प्रयासों का समर्थन कर रहा है। अब तक 2000 से अधिक व्यक्तियों को परामर्श, चिकित्सा सहायता, कुछ सबसे ग़रीब समुदायों को भोजन सहित आवश्यक निवारक सामग्री का वितरण और टीकाकरण शिविरों का आयोजन किया गया है।

शासन समीक्षा

पैरवी/मौसम कई वर्षों से जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण भाग की शासन समीक्षा में मदद कर रहा है। वादा न तोड़ो अभियान द्वारा आयोजित गवर्नेंस रिव्यू शासन संबंधी कमियों, ठोस सिफारिशों और माँगों की एक व्यापक समीक्षा है, जिसमें शासन, मानवाधिकार और लोकतंत्र के अलावा आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय क्षेत्रों को शामिल किया गया है। पैरवी ने 2020-21 के गवर्नेंस रिव्यू के जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण के हिस्से में योगदान दिया है।

महामारी के दौरान बच्चों की देखभाल और संरक्षण में हमारी भूमिका

यह ऑनलाइन परामर्श 7 अप्रैल 2021 को विशेष रूप से वंचित वर्ग के बच्चों की स्कूली शिक्षा के मुद्दे पर चर्चा करने के लिए आयोजित किया गया। महामारी के कारण शैक्षणिक संस्थानों को बंद करने से ग़रीब छात्रों की शिक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में कंप्यूटर, स्मार्ट फोन और इंटरनेट तक पहुंच की कमी ने ग़रीब पृष्ठभूमि के छात्रों के लिए ऑनलाइन कक्षा को एक दूर का सपना बना दिया है। परामर्श के दौरान वक्ताओं ने सामुदायिक रेडियो के माध्यम से शिक्षा पर ध्यानाकर्षण किया। परामर्श के दौरान 'मेरा घर-मेरा स्कूल' के एक अभिनव विचार पर चर्चा की गई जिसका उद्देश्य प्रशिक्षित स्वयंसेवकों द्वारा छात्रों को उनके घर पर पढ़ाना है।

बिहार में कैदियों की रिहाई के लिए जनहित याचिका

पैरवी द्वारा लगातार कैदियों के अधिकारों की वकालत की जाती रही है। हमारे सहयोगी संगठन बंदी अधिकार आंदोलन ने कैदियों की तत्काल रिहाई की माँग करते हुए 12 मई 2021 (सीडब्ल्यूजेसी 10253/2021) को पटना उच्च न्यायालय में जनहित याचिका दायर की है। जनहित याचिका, कोविड-19 महामारी के बीच जेलों में भीड़भाड़ कम करने और जेल में शारीरिक दूरी सुनिश्चित करने के सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर आधारित है। मामला अभी कोर्ट में विचाराधीन है।

आपदा जोखिम न्यूनीकरण और युवा

पैरवी के निदेशक अजय झा 30 अप्रैल को मेजर ग्रुप ऑफ चिल्ड्रन एंड यूथ और स्टाक्होम इन्वायरनमेंट इंस्टिट्यूट द्वारा आयोजित दो दिवसीय एशिया पैसिफिक यूथ फोरम के समापन सत्र में आपदा जोखिम को कम करने में युवाओं की भूमिका विषय पर प्रतिभागियों संबोधित किया।

एपीआरसीईएम की रणनीतिक योजना

एशिया पेसिफिक रीजनल सीएसओ एंगेजमेंट मैकेनिज़्म (एपीआरसीईएम) की रणनीतिक योजना कार्यशाला 25 मई, 1 जून और 8 जून को आयोजित की गई। कार्यशाला का उद्देश्य एपीआरसीईएम के मूल्यांकन से प्राप्त सिफारिशों पर चर्चा कर 3-5 साल की रणनीतिक योजना तैयार करना था। इस कार्यशाला में क्षेत्रीय समन्वय समिति (आरसीसी) और विषयगत कार्यसमूह का प्रतिनिधित्व करने वाले लगभग 50 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

संपादक मंडल
प्रो. संजय भट्ट
अजय के. झा
रजनीश साहिल

लेआउट
रजनीश साहिल

प्रकाशक
पैरवी
के-8, तीसरा तल, लाजपत नगर-3, नई दिल्ली-110024
द्वारा सीमित प्रसार के लिए प्रकाशित

मुद्रक
दिनकर आर्ट्स
दिल्ली

संपर्क - फोन: 011-29841266, 46101652 | ईमेल: pairvidelhi1@gmail.com, info@pairvi.org | वैबसाइट: www.pairvi.org